उस क़ौम को शमशीर की हाजत नहीं रहती, हो जिसके जवानों की ख़ुदी सूरते फ़ौलाद।

ऑल वर्ल्ड बोहरा जर्नल

(मासिक)

रजिः RAJH/9396 पोस्ट रजि. नं.RJ/SR/29/12/2006-08 7, अक्टूबरः 2008 वर्ष –16 अंक 4 मूल्य 3 रु वार्षिक 35/– रु.

ईद, दीपावली, क्रिसमस आदि पर्व हर मज़हबो मिल्लत में किसी न किसी रूप में मौजूद है एवं किसी न किसी नेक अमल से जुड़े है जो हमें खुशी मनाने के लिये प्रेरित करते है। ऐसे पर्वो का सांस्कृतिक महत्व भी है।

ईद का हमारा यह पर्व भी उसी कड़ी का एक हिस्सा है। माहे रमज़ान के फाज़िल महीने को पूरी खूबी के साथ अलविदा कहने के बाद मनाये जाने वाले इस पावन पर्व पर बोहरा यूथ, दाउदी बोहरा जमाअत, ऑल वर्ल्ड बोहरा जर्नल बोर्ड और इससे जुड़े सभी इदारों की जानिब से सभी हज़रात को

ईद की दिली मुबारकबाद !

عيد مبارك

माहे रमजान में उदयपुर की सभी मस्जिदों में नमाज़ अदा करते इस्लाह पसंद बोहरा हज़रात

रसूलपूरा मस्जिद

खारोल कॉलोनी

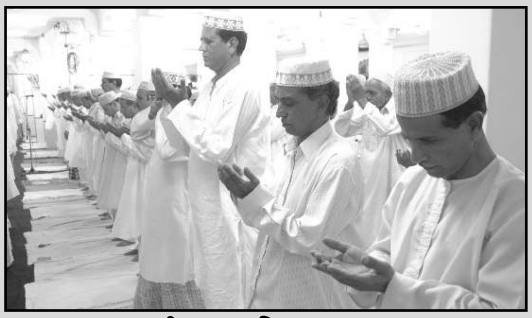
वजीहपुरा मस्जिद

रसूलपूरा मस्जिद

मोईयदपुरा मस्जिद

चमनपुरा

डॉ. कनीज़ फातिमा को सम्मान

डॉ. कनीज़ फातिमा सादड़ीवाला, बोहरा यूथ के सरगर्म रूकन और ज़िम्मेदार कार्यकर्ता मरहूम अब्दुल हुसैन आर. वी. की बेटी है, जो हिन्दुस्तान ज़िंक में कार्यरत रहते हुए बोहरा यूथ के 70 के दशक के सारे ऑफिस के कार्य पूरी ज़िम्मेदारी के साथ देखते थे। बोहरा यूथ आपके तआवुन को तसलीम करता है।

खुद फातिमा अपने मरहूम वालिद के नक्शे कदम पर चलते हुए 1986 से 1991 तक स्टूडेंट वेलफेयर सोसायटी की ज़िम्मेदार कारकुन रही और आपके नेतृत्व मे मोइज़ राज व शहीद रजब अली मेमोरियल टूर्नामेंट जैसे प्रोग्राम मुनकिद किये। आज भी आप जहां कहीं जाती है बोहरा तहरीक का प्रतिनिधित्व करने में नहीं चूकती है। डॉ. फातिमा आज जिस मुकाम पर है वह पूरे बोहरा यूथ के लिये बायसे फख़्र है। आप अब तक Retail Management, Mall Management, Marketing Management पर तीन किताबें लिख चुकी है और अरावली इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट की डायरेक्टर है। आप World Council for Credit Union की जानिब से हांगकाग में होने वाली कांफ्रेन्स में गयी, जहां आपने देश का प्रतिनिधित्व किया। इस आयोजन में 48 देशों से 1700 प्रतिनिधियों ने भाग लिया। अपने देश का नेतृत्व करते हुए डेढ़ घंटे के अभिभाषण में दि उदयपुर अरबन कॉ–ऑपरेटिव बैंक लिमिटेड को केस स्टडी के रूप में पेश किया एवं बताया कि यह विश्व की इकलौती कॉ–ऑपरेटिव बैंक है जो बहु–आयामी उद्देशयों के साथ विगत अनेक वर्षो से अपने मेंम्बरों को 50% लाभाशं वितरित कर रही है। जहां बैंक की कार्य प्रणाली को सभी मेम्बरों द्वारा सराहा गया। वर्तमान में बैंक उन चुनिंदा बैंकों की फहरिस्त में है, जिनमे 30% बोर्ड ऑफ डॉयरेक्टर महिलाएं है और मैनेजमेंट की बागडोर युवा वर्ग द्वारा सम्भाली जा रही है। डॉ. कनीज़ फातिमा को बार्सिलोना, स्पेन, में होने वाली इस कांफ्रेन्स में अभी से निमंत्रण प्रदान किया गया है।

हमारा सवाल : सामाजिक रीतियों में बढ़ते आर्थिक अपव्यय पर रोक के लिए आपके सुझाव ?

How can we put a stop to the rising extravagance in our social customs. Please give your suggestions ?

Please send your contribution to: The Editor : All World Bohra Journal , 73 Dr. Zakir Hussain Marg, Udaipur

इदारिया

क्या कर रहे हैं?अपने गरेबां में झांकिये!

इस्लाम धर्म के मानने वाले कलामें–इलाही यानि कुरआन मजीद और अल्लाह के प्यारे रसूल (स.अ.) की हदीसों पर ईमान रखते हैं और यह अक़ीदा रखते हैं कि इन दोनों माध्यमों से जो भी फरमाया गया है, उन पर अमल करने से पूरे इन्सानी समाज की रूहानी (आध्यात्मिक) और दुनियावी ज़िन्दगी निजात पाती है, संवर जाती है।

ज़िन्दगी और फिर सामूहिक सामाजिक ज़िन्दगी के बारे में जो निर्देश दिये गये हैं, उनमें से एक है माँ–बाप की इज़्ज़त करना। उन्हें हर तरह से सम्मान देना और इसे लाज़मी क़रार दिया गया है। माँ बाप के साथ अच्छा और भला बर्ताव करने की सख़्त ताकीद की गई है। उनकी खुशी का ख़्याल रखने का हुक्म दिया गया है। उनकी फरमाँबरदारी का सबक़ सिखाया गया है। क्योंकि औलाद पर इन दोनों के अहसानों की कोई सीमा ही नहीं है।

सूरः बनी इस्राईल की 23–24वीं आयतों में इरशाद होता है कि ''तेरे रब ने यह फैसला कर दिया है कि उसके सिवा किसी दूसरे की इबादत न करो और माँ बाप के साथ अच्छा बर्ताव करो। अगर उनमें से कोई एक या दोनों तुम्हारें सामने बुढ़ापे को पहुंच जाए तो उनसे कभी ''उफ़'' तक न कहा, न उन्हें झिड़कों। बल्कि उनसे नर्मी से बात करो और रहमदिली के साथ उनके लिये विनम्रता से कंधों को झुका दो और दुआ करो कि ''ऐ मेरे रब! जिस तरह इन्होंने बचपन में मेरी परवरिश की है, उसी तरह अब इन दोनों पर रहम फरमा।''

इन आयतों में अल्लाह ने माँ और बाप के साथ अच्छा सुलूक और बात–चीत में नर्मी बरतने का हुक्म दिया है।

अब सूरः लुक़मान की 15वीं आयत देखिये, इरशाद होता है ''लेकिन अगर वे (माँ–बाप) तुझ पर यह दबाव डालें कि तू किसी चीज़ को मेरा शरीक (सहभागी) ठहराये, जिसका तुझे कुछ भी ज्ञान नहीं, तो उनका कहना न मानना और दुनिया में उनके संग भले तरीक़े से रहना और उस शख़्स के रास्ते पर चलना जिसने मुझसे लो लगाई।''

यानि अगर माँ बाप शिर्क (कुफ्र) की तालीम दे तो उसका कहना न माना जाये, लेकिन इसके बावजूद भी यह कहा गया कि उनसे सम्बन्ध नहीं तोड़े जाये ब्लिक उन्हें बग़ैर तकलीफ पहुंचाये दुनिया के कामों में उनका अच्छी तरह साथ देने का हुक्म दिया गया है।

सूरः लुक़मान की 14वीं आयत में फरमाया जाता है ''और हमने इन्सान को जिसे उसकी माँ ने दुःख पर दुःख सह कर पेट में रखा। इसके अलावा दो वर्ष में उसकी दूध बढ़ाई की अपने और उसके माँ–बाप के बारे में ताकीद की कि मेरा भी शुक्र अदा करो और अपने माँ–बाप का भी।''

देखिये ऊपर वाले ने अपने शुक्रिये के साथ–साथ माँ बाप के शुक्रिये की भी ताकीद की। ख़ास तौर से माँ का इसलिये कि उसे बाप के मुक़ाबले में ज़्यादा तकलीफ़ें उठानी पड़ती हैं।

यही नहीं परवरदिगार ने माँ बाप की माली इम्दाद की तरफ भी तवज्जोह दिलाई है। इरशाद होता है

''ऐ नबी! लोग आपसे पूछते है कि वे माल कैसे ख़र्च करें। तो आप उनसे कह दीजिये कि तुम अपनी नेक कमाई से जो ख़र्च करो तो उसमें तुम्हारे माँ–बाप ओर रिश्तेदारों और यतीमों और परदेसियों का हक़ है।''

इस हक़ की बात में माँ–बाप का नाम पहले लेकर उन्हें सब पर तरजीह दी गई है। इससे माँ–बाप का रूत्बा ज़ाहिर होता है।

फिर माँ ही अपनी औलाद की परवरिश में अपना ऐशो–आराम छोड़ कर, अपना खून–पसीना एक करके उसे आराम पहुंचाने की हर मुमकिन कोशिश करती है। उसे तहज़ीब, अख़लाक, इल्म और अदब से संवार कर इन्सानियत की बुलन्दी पर पहुंचाती हैं। ज़िन्दगी की तमाम ऊंच नीच से ख़बरदार करना अपना पहला फर्ज़ समझती है। ताकि उसकी गोदी में पलने वाला बच्चा अच्छा इन्सान बन सके। इस्लाम के पैग़म्बर ने इसीलिये माँ

Continued on facing page

बोहरा यूथ की मुजाहिद ख़ातून

बानू बाई ताज

मोहतरिमा बानू बाई ताज बोहरा यूथ की एक जिम्मेदार मुजाहिद खातून है। आप 1973 की गलियाकोट वारदात से बोहरा यूथ से जुडी है। बोहरा यूथ के तत्कालीन मुजाहिद साथियों की मां कहलाने वाली बुजुर्ग खातून गलियाकोट मे हुई वारदात पर आपने तअसुरात पेश करते हुए रो पड़ी।

आपने बताया कि ''1973 में जब हमारे लोगों पर जुल्म ढ़ाये जा रहे थे, उस वक्त मैं दरगाह में थी तब सैफुद्दीन भाई बंदूकवाले ने कहां ''नौ दो ग्यारह हो जा''! पहले मैं कुछ समझी नहीं फिर जैसे ही मैं बहार आयी सारा माजरा समझ में आ गया। हम जैसे तैसे उदयपुर पहुचें तो यहा अलग ही माहौल था। पत्थर और कांच बिखरे हुए थे''।

''तहरीक का कारवां जैसे जैसे आगे बढ़ता रहा हमारे हौंसलें बुलंद होते रहे। हम लोग उन दिनों वजीहपुरा में रहते थे हमारे नौजवान बच्चे अक्सर रसूलपुरा और वजीहपुरा के आस पास घूमते रहते थे, कही कोई अनहोनी का अंदेशा नजर आता तो मिन्टों में जूलूस की शक्ल बन जाती थी और एक नारे की गूंज ''जियेंगें तो एक साथ मरेंगे तो एक साथ'' सारे गली मोहल्लों मे फैल जाती थी। इस नारे के जवां मर्द लीडर सज्जाद जयपुरी जो अब मीसाक दे चुके है, अपनी जोशीली तकरीर से माहौल को और ताकतवर बना देते थे।

आप बताती है कि आज मैं 75 की उम्र पार कर ज़िंदगी की आखिरी पायदान पर हूँ और हौंसला यह कहता है कि हर मोर्चे पर मौजूद रहूँ पर सेहत साथ नहीं देती है। आपके दो बेटियां और 3 बेटे है हर एक तहरीक के लिये अपनी मां जैसा जज़्बा रखते है। अपनी बात मे आपने ज्यादातर जिक्र अपनी बेटी रशीदा का किया जो बहुत कम उम्र में ही आलमे फानी को सलाम कह गयी।

आप बोहरा यूथ कम्यूनिटी हॉल की तश्कील से बहुत खुश दिखी मगर उसका जिस तरह इस्तेमाल हो रहा है वह बहुत कड़वा लगता है। यहां होने वाले खानों ने हमारे मज़बूत इरादों को कमज़ोर किया है। अब भी वक्त है हमें सोच समझ कर कोई कदम उठाना चाहिये। अल्लाह आपकी उम्र दराज करें। आमीन!

- Razia Sanwari

बोहरा यूथ तहरीक के उद्देश्य उनका भूतकाल, वर्तमान एवं भविष्य

दारूल मुतालियातुल बुरहानिया की और से ''बोहरा यूथ भूत, वर्तमान व भविष्य'' विषय पर लिखे गये निबंध में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाली जीनत खाखड़ वाला के निबंध का सार

''निर्बल से लड़ाई बलवान की, ये कहानी है दिये की और तूफान की।'' आइये आज मैं आपको एक कहानी सुनाती हूँ। ये कहानी एक दाई के शोषण और उनसे जूझते जाँबाज़ों की है।

करीब छत्तीस बरस पहले 51वें दाई सैय्यदना ताहेर सैफुद्दीन साहब ने मज़हब को तिज़ारत में बदलकर, दोनों हाथों से कौम को लूटना शुरू कर दिया। तब कौम के मज़लूमों ने उनके खिलाफ आवाज़ बुलंद की।

जब दाई के ज़ुल्म बर्दाश्त न कर पाने की हद तक बढ़ गए, तो कुछ मुज़ाहिद, कुछ दिलेर उनसे अलग हो गए और उन्होंने अपना एक सुधारवादी गुट कायम किया, जिसका नाम बोहरा यूथ रखा गया।

उदयपुर के इसी तारीखी शहर में हम सभी बोहरा यूथियों की जड़े हैं। माना कि हमारी तादाद बहुत थोड़ी है और कोठार के पास अंधे अकीदत मन्दों की बहुत बड़ी जमाअत है। लेकिन तारीख गवाह है कि जीत हमेशा पक्के इरादों की हुई है।

पिछली तीन दहाइयों में कोठार ने हमारा समाजी – बहिष्कार (बराअत) किया, जिसको ग़ैर इस्लामी माना जाता है, क्योंकि ये तकनीक बुतपरस्त अरबों ने इस्लामी तहरीक पर चलने वालों के खिलाफ अपनाई थी।

हम पर कई ज्यादतियाँ की गई। हमारा खानदानी और समाजी जीवन बर्बाद कर दिया गया । हमें अदालतों में भी घसीटा गया, पर हमने इन सब का डटकर मुकाबला किया।

हमने अपना जमाअती निज़ाम कायम किया, जो कि कोठारी जमाअतों से लाख दर्जा बेहतर है। हमने अपनी आवाज़ बुलंद करने के लिए ''लफ्ज़ों'' को अपना ज़रिया बनाया है। हमारे अख़बार ''बोहरा जर्नल'' जो हमेशा से उदयपुर से प्रकाशित होता आया है और ''बोहरा क्रोनीकल'', जो कि मुम्बई से छपता है, हमें अपनी कौम द्वारा की गई तरक्की के बारे में बताता है।

अपनी बात सबके, सामने रखने का एक बहुत अच्छा तरीका ''कांफ्रेस'' कायम करना भी है। कई बार हमारी कांफ्रेसों को नाकाम करने की नापाक कोशिशें की गई। मस्जिदों की मिल्कियत के सिलसिले में भी कोठार ने कई बार हम पर झूठे दावे किए, लेकिन हर बार उन्हें मुँह की खानी पड़ी है। आज भी सारी मस्जिदों का मालिकाना हक़ बोहरा यूथ के पास है।

उदयपुर की तारीख़ी किताब के कई पन्नों पर हमने सुनहरे अक्षरों में अपना नाम दर्ज करवाया है। हमने उदयपुर में पहली बार और फिर कई बार और समूह निकाह का आयोजन करवा के सभी समाजों के सामने एक मिसाल कायम की हैं।

आज हमारी नई पीढ़ी सारी दुनिया में फैल चुकी है और अपना और अपनी तहरीक का नाम रोशन कर रही है। इसकी मिसाल हमारे वो भाई–बहन हैं जो कुवैत, अमेरीका वग़ैरह में है और वहाँ पर अपनी तहरीक को ज़िदा रखे हुए है। इसके अलावा हमने अब तक कई दीनी और दुनियावी आयोजनों को कामयाब तौर पर मुकम्मल किया है और सबसे अहम बात तो यह है कि हमारी ये जंग, किसी इंसान के खिलाफ नहीं है। हमारी जंग तो ज़बरदस्ती की बंदिशें जैसे रज़ा और बराअत के ख़िलाफ है और अल्लाह ने चाहा तो हमें कामियाबी ज़रूर हासिल होगी।

सच तो यह है कि हज़रत इमाम हुसैन की शहादत ने ही हमें ये सबक दिया है कि हक़ के लिए हर कुर्बानी पेश कर दो, पर बातिल से न दबो और इसी वज़ह से, आज हम सर ऊँचा करके कह सकते हैं कि,

**''बातिल से दबने वाले, ऐ आसमां नहीं हम।
सौ बार कर चुका हैं तू इम्तिहां हमारा।''**

Continued from Page 2

क्या कर रहे हैं? अपने गरेबां में झांकिये!

की हर हालत में इज़्ज़त और सम्मान करने के लिये इरशाद फरमाया है।

हशशाम इब्ने सालिम इमाम जाफ़रूस्सादिक़ (अ.स.) से रिवायत करते हैं कि ''इमाम जाफर ने फरमाया कि एक शख़्स रसूलल्लाह (स.अ.) के पास आया और पूछा 'ऐ अल्लाह के रसूल हम किसका सम्मान करें', रसूल ने फरमाया – अपनी माँ का, फिर उसने पूछा उसके बाद किसका सम्मान करें, फिर रसूल ने फरमाया अपनी माँ का। तीसरी बार फिर उसने पूछा कि उसके बाद किसका सम्मान करें, पैग़म्बर ने फिर माँ ही के सम्मान की बात कही। लेकिन जब चौथी बार उस शख़्स ने फिर वहीं सवाल किया तो आपने फ़रमाया कि अपने बाप का सम्मान करो।''

मुलाहिज़ा किया आपने। अब देखिये रसूले करीम की मशहूर हदीस कि ''माँ के पावों के नीचे जन्नत है।'' यानि दुनिया में इन्सान के लिये जो लोग भी सम्मान के लायक़ हैं, उनमें माँ–बाप का दर्जा पहला है।

अब इन्हीं आयतों और हदीसों को ध्यान में रखते हुए ''सूरः जासिया ''कि 18वीं आयत पर ग़ौर कीजिये कि ''फिर इस सिलसिले में (हे मुहम्मद!) हमने तुम्हें एक साफ रस्ते पर लगा दिया है, तो तुम उसी राह पर चलो। उन लोगों की ख़्वाहिशों पर मत चलना जो जानते नहीं''।

ऊपर के इन सभी फरमानों के पेश नज़र वो लोग इब्रत लें, जिन्होंने किसी के कहने से या डर की वज़ह से या किसी के बहकावे में आकर अपने माँ–बाप से रिश्ता तोड़ कर अलगाव पैदा कर लिया। वो लोग सोचें जिन्होंने अपनी माँ–बाप से नफरत करके उनका नाम ही बदल लिया। वो लोग ग़ौर करें जो जान–बूझकर अपने बुज़ुर्ग माँ–बाप के जनाज़े में शरीक नहीं हुए, न उन्हें आख़िरी वक़्त में कंधा दिया। उस रास्ते भी नहीं गुज़रे जहां से उनका जनाज़ा गया और ज़िन्दगी में कहीं आमना सामना हो गया तो नज़र झुकाये दामन बचा कर निकल गये। और आज भी कई लोग इस मुसीबत में मुब्तला हैं। वो गरेबान में झांक कर देखें कि जो हरकत उन्होंने की है, क्या वह ख़ुदा और रसूल के फरमान के मुताबिक़ है?क्या उनके कलेजे को यह बात कचौटती नहीं है?क्या यह घिनौना हथियार अपने ही अज़ीज़ो पर चला कर वे मुत्मइन हैं?

यह भी उन्हें सोचना होगा कि ज़िन्दगी के चंद लम्हों में किसी की ख़ुशी की ख़ातिर अपनी आख़िरत तो ख़राब नहीं कर ली हैं?सोचें कि क़ुरआन और रसूल की नाफ़रमानी करके हिसाब के दिन ख़ुदा और रसूल को क्या मुहँ दिखायेंगे?एक रास्ता है कि ज़िन्दगी के बाक़ी रहें दिनों में तौबा करके अपनी ग़ल्ती सुधार लें।

–आबिद अदीब

यह काम नेक है, दुनिया व आख़िरत के लिये

क़ुरआन मजीद की ज़बान अरबी है और अरबी फसीहो–बलीग़ ज़बान है, जिसका अदब सारी दुनिया से दाद हासिल कर चुका है और बहुत पुराना होते हुए भी आज आलम के कोने कोने में पढ़ा और समझा जाता हैं। हमारे यहां भी अरबी क्लास चलाने की बात लम्बे समय से चल रही थी। अब यह बात ख़ुशी की है कि स्टूडेन्ट वेल्फ़ेयर सोसायटी ने मौलाना फीरोज़ अहमद मिर्ज़ा से क़ुरआन मजीद की क़िरअत और अरबी ग्रामर और जनाब पीर अली से इस्माईली अक़ायद बाबत तालीम की क्लासें शुरू की हैं। जो हफ्ते में 5 दिन चलती है।

ख़्वाहिशमन्द हज़रात और तालिब इल्म इस सहूलियत से फ़ायदा उठायें और अपनी पहली फ़ुरसत में सम्पर्क स्थापित करे।

–आबिद अदीब

NEWS IN BRIEF

मज़लिस ए शहादत हज़रत मौला अली अ.स.

बोहरा यूथ एवं दाउदी बोहरा समाज की ओर से मज़लिस–ए–शाहादत–अमीरूल मोमिनीन हज़रत मौला अली (अ.स.) बहुत अकीदत के साथ मस्जिद वजीहपुरा में जनाब मुल्ला पीर अली साहब की सदारत में मनाया गया। इसकी शुरूआत कुरआने पाक की तिलावत से हुई।

इसके बाद वाअज़ तकरीरे एवं नियाज़ हुई, इस अवसर पर मौला अली की सादा जीवन एवं उच्च विचारों पर रोशनी डाली गई व उनकी फज़ीलतो का ज़िक्र किया गया, उनकी पुस्तक नहजुल बलागाह के संदेश को घर घर पहुँचाने की बात कही गई।

जश्ने विलादत ईमाम हसन (अ.स.) मनाया

रमजान–उल–मुबारक़ के पवित्र महीने में बोहरा यूथ मेडिकल रिलीफ सोसायटी की ओर से रविवार को पैगंबरे इस्लाम हज़रत मोहम्मद के नवासे इमाम हसन के जश्न–ए–विलादत के अवसर पर बोहरावाड़ी स्थित वजीहपुरा मस्जिद में मजलिस हुई।

मजलिस में मुल्ला पीर अली ने इमाम हसन के सादगीपूर्ण जीवन पर रोशनी डाली। दिल्ली में हुए बम विस्फोट की घटना की निंदा कर देश में अमन चैन की दुआ मांगी गई। उसके बाद हज़रत इमाम हसन की शान में नाअत, मनकबत व तकरीर से उनकी फज़ीलत बयान की गई।

बोहरा यूथ पब्लिक स्कूल में शिक्षक दिवस

बोहरा यूथ पब्लिक स्कूल, खांजीपीर में 5 सितम्बर, 2008, को शिक्षक दिवस पर एक परिचर्चा का आयोजन किया गया जिसका विषय ''शिक्षा, शिक्षक एवं समाज'' था। जिसमें पूर्व शिक्षा उपनिदेशक श्री जवाहरलाल झंवर, वर्द्धमान कॉलेज ऑफ लॉ के प्रिंसीपल, डॉ एस. एन. व्यास, वरिष्ठ साहित्यकार श्री प्रहलाद नारायण वाजपेयी, वरिष्ठ पत्रकार मुनव्वर राही और शिक्षाविद श्री प्रफुल्ल कुमार दशोरा थे। इसका संचालन शिक्षाविद डॉ. रोशन आरा ने किया।

संस्था ने शिक्षक दिवस के मौके पर अध्यापिका एवं लेखिका डॉ. रोशन आरा का अभिनन्दन किया।

इस कार्यक्रम की संयोजिका बोहरा यूथ पब्लिक स्कूल, खांजीपीर की प्रिंसीपल श्रीमती जोहरा खान को बनाया गया।

-Hussain Udaipuri

काफिला हज पर रवाना होगा

बोहरा यूथ एवं दाऊदी बोहरा जमात के हाजियों का बड़ा काफिला हर साल की तरह इस साल भी शीघ्र ही हज के लिए रवाना होगा। समस्त हाजी फरीज़ाए हज़ के बाद मिस्र, ईराक, ईरान, सीरिया, बैतुल मुकद्दस, जोर्डन एवं कुवैत और दुबई जायेंगे और तमाम नबियों, रसूलों एवं इमामों की ज़ियारत कर लौटेंगे।

जनाब शब्बीर हुसैन की तिलावते कुरान के बाद, दाऊदी बोहरा जमाअत के नेता जनाब मन्सूर अली कमाण्डर ने बताया कि समस्त हाज़ियों की तैयारी की औपचारिकताएं पूरी कर ली गई है। जनाब आशिक अली नवानियावाला, जनाब असगर अली अत्तारी ने भी अपने विचार व्यक्त किये।

- Hussain Udaipuri

डॉ. शगुफ्ताः कामयाबी के राह पर

डॉ. शगुफ्ता सेफी बोहरा तेहरीक के जांबाज सिपाही सैफ़ुद्दीन भीलवाड़ा वाला के परिवार से तआलुक रखती है। आपके परिवार का हर फर्द हमारी तेहरीक में सक्रिय रूप से हिस्सा लेता है। स्कूली तालीम आम स्कूलों में हुई पर शगुफ्ता की पढ़ने में दिलचस्पी और कड़ी मेहनत ने इनको स्कूल की तालीम ही से होनहार स्टूडेंट बनाया और लगातार कामयाबी हासिल करती गयी।

शगुफ्ता अव्वल दर्जे से कम नम्बर लाने का मतलब अपने आपको फेल समझती है। लिहाज़ा स्कूल स्तर से M.A. तक कभी 70% से कम नम्बरों से पास नहीं की। आपने सेकेण्डरी राजस्थान बोर्ड से 85.20 प्रतिशत हासिल कर उदयपुर की मेरिट में पहला नम्बर हासिल किया, जो न सिर्फ उनके और उनके परिवार के लिये बल्कि पूरी बोहरा यूथ के लिये फख़्र की बात हैं।

अब तक आपके 4 रिर्सच पेपर मुख्तलिफ विषयों पर प्रकाशित हो चुके है। आप हाल में मीरा गर्ल्स कॉलेज में लेक्चरार के पद पर कार्यरत है।

अपनी नौकरी व पारिवारिक ज़िम्मेदारियों के बावजूद वक्त निकाल कर हाल में Ph.d. की सनद हासिल की, जो पूरी बोहरा कौम के लिये बायसे फख्र है।

शगुफ्ता ने न सिर्फ अपने आप को बेहतर बनाने में मसरूफ रखा, बल्कि अपनी छोटी बहनें सिद्दीका और फरहत सैफी को भी प्रेरित किया कि वह कड़ी मेहनत और लगन से अपना कैरियर बनाने में जुटे। इसका नतीजा है कि आपकी दो बहनें सिद्दीका C.A. है व फरहत डॉक्टर है।

Health & Happiness for the Humanity on th occasion of Eid-ul-Fitr

One-Stop-Shop for all your Medical and Health Care Needs

WWW.healthproductsforyou.com

Career Opening in India :

Graduates / Post Graduates /MBAs.
Should be IT savvy with good command over written and spoken English.

Email :
resumes tohr@healthproductsforyou.com
or contact :
Quaisar Medisoft Pvt. Ltd., Udaipur.

Quaisar Medisoft Private Ltd.
305, Emerald Towers, Ashwini Marg,
Udaipur - 313001, Rajasthan
+91-294-2426594/2415794

Health Products For You
1, Hillview Dr W
New Fairfield, CT 06812 USA
+ 1-203-616-2850, +1-203-746-1220

Letter to the Editor :

आप अपने तअ्स्सुरात और मशविरों से आगाह करते रहें। अधिकतम 200 शब्दों में लिखें।

We invite you to write to us with your views and opinion on any issue. Your letters should not be more than 200 words.

Addressed to: The Editor, All World Bohra Journal, 73, Dr. Zakir Hussain Marg Udaipur 313001, E-mail : bohra.journal@hotmail.com

मौजूदा हालात और ज़कात – Part II

Continued from next month

मजीद ज़कात ''निसाब'' तय कर लेने के बाद जायद अज़ निसाब अमवाल पर देना वाजिब है। तमाम जाइज़ जरूरियात के पूरा हो जाने के लिए जो वसाइल चाहिए उसे ''निसाब'' कहा गया है। जाइज़ ज़रूरियात में हुकूमते वक्त का टेक्स भी गोया इसमें शामिल है, अब इसके बाद जो सरप्लस पूरे साल में हाथ आता है, उस पर ज़कात वाजिब है। उसका अदा करना फर्ज़ है।

यह भी ग़ौर करने की बात है कि ''निसाब'' डाइनामिक है, स्टेटिक नहीं। अलग–अलग मुमालिक और अलग–अलग मुआशिरे में ''निसाब'' उस मुल्क और मुआशिरे के स्टेण्डर्ड ऑफ लिविंग पर मुनहसिर होगा और उसी हिसाब से ''निसाब'' भी तय किया जायेगा।

कुरान मजीद में जगह–जगह ज़कात और सदक़ात के लिए इन्फाक़ ''फी सबीलिल्लाह' आया है। याने खुदा की राह में खर्च करना।

ज़कात के हकदार कौन कौन हैं

अब तक ज़कात की अदायगी की बात कुरान शरीफ की सुरः और आयाते करीमा की रोशनी में की गईं। अब सवाल यह उठता है कि इस इकट्ठा की गई दौलत/अमवाल को इस्तेमाल कैसे किया जाय, या इस पर किसकी हकदारी है। तो कुरान मजीद में इसका भी इंतजाम है। सुरः तौबा की आयत 60 (9:60) जो हुक्मे इलाही है, वह ज़कात की हकदारी तय करता है। इस हुक्म की रूअ से ज़कात के आठ (8) हक़दार है। इनकी मुख्तसर तफसील यह हैः

1. **फुक़रा** – यह वह लोग है जिनके पास माल तो है मगर जायज़ ज़रूरतों को पूरा करने के लिए ना काफी है। तंगदस्ती बरदाश्त करते है मगर मांगते नहीं।

2. **मसाकीन** – यह बहुत ही तबाह हाल है। जिनके पास तन की ज़रूरत भी पूरी करने के वसायल न हो। (हज़रत उमर ने ऐसे लोगों को भी शामिल किया है जिसे कोशिशों के बाद भी रोज़गार मयस्सर नहीं होता)

3. **आ़मिलीन अलेह** – वह लोग जो ज़कात की वसूली में लगते है, उनको जक़ात ही में से तनख़्वाह देना/इस्लामी हुकूमतों में ज़कात वसूली के महकमें को मेन्टेन करने का खर्च। जहां इस्लामी हुकूमत नहीं और एक एरिया में इजतिमाई तौर पर ज़कात वसूली होती है, तो जो ऐसा करते है उस पर खर्च।

4. **मुआल्लिफतुल कुलूब** – इनसे मुराद – (i) वो लोग है जिनको इस्लाम की हिमायत के लिए या मुख़ालिफत से रोकने के लिए रूपया देने की जरूरत पेश आए। (ii) वो नोन–मुस्लिम जिन्हें मुतमईन करने की ज़रूरत हो (iii) वो लोग जो शिर्क छोड़ कर मुसलमान हो जाते है और इस कार्यवाही में तबाह हो जाते है तो ऐसो की मदद। तारीख में है कि रिसालत मआब (स.अ.व.स.) ने जंगे हुनैन के माल ग़नीमत में से नोन–मुस्लिमों को बहुत माल दिया था।

5. **फिर्रिक़ाब** – इससे मतलब जो शख़्स गुलामी के फंदे से छूटना चाहता हो उनको ज़कात दी जाय ताकि अपने मालिक को लागत देकर आज़ाद हो ज़ाय (किसी ने 1400 साल पहले इन्सानी हकूक के दिफाअ का ऐसा कोई इंतिज़ाम सुना?) आज के ज़माने में गुलामी नहीं जैसे पहले थी मगर दूसरी किस्म की गुलामी अभी भी जारी है।

6. **अल ग़ारिमीन** – याने वह बेबस कर्ज़दार जो चाहते हुए भी कर्ज़ न चुका सकता हो, उसकी मदद।

7. **फी सबीलिल्लाह** – हालाँकि इस लफ़्ज़ का इस्तेमाल तमाम नेक कामों से है मगर खास तौर से इस्लाम की बुलंदी के काम से मुराद है।

8. **इब्ने अस्सबील** – याअने मुसाफिर। अगरचे मुसाफिर के पास अपने वतन में बहुत माल अस्बाब हो मगर सफर के दौरान अटक जाता है, किसी जायज़ मजबूरी की वज़ह से (मसलन जेब कट जाना, लुट जाना) तो उसकी ज़कात फण्ड से मदद करना ।

(क्या कोई सरकार टेक्स के पैसों से मन्दर्जा वाला इमदाद को ध्यान में रखती है?)

ज़कात किन चीज़ो पर वाजिब है

अल्लाह तआला ने कुरान मजीद में तीन जगह अलग–अलग अहकाम फरमाए हैं।

1. सुरः बकरः आयत 267 – ''जो पाक माल तुमने कमाए है और जो पैदावार हमने तुम्हारें लिए ज़मीन से निकाली है, उसमें से राहे खुदा में खर्च करो।''

2. सुरः अल–अन्आमः आयत 141 – इसमें खेतों और बागों की उपज पर अल्लाह का हक निकालने का इरशाद है।

3. सुरः तौबाः आयत 34–35 – सोने और चाँदी (जेवरात वगैरह) के बारे में है। ज़ेवरात पर ज़कात हदीसों में भी आया है।

ज़कात कब, किस पर और किस सूरत में वाजिब

अलग–अलग मस्लक में इसकी तफसील है। शिया, इस्माईली मस्लक में (मज़हब में) ''दआईमुल इस्लाम'' हिस्सा अव्वल भाग ''किताबुज्ज़कात'' में तफसील मौजुद है। इसका उर्दू, अंग्रेज़ी तर्जुमा हमारी लाइब्रेरी में मौजूद है और लिसानुद्दावत (बोहरा गुजराती) में शेख अहमद अली साहब का नुस्खा भी मौजूद है। एहले ज़ौक इन किताबों का मुआइना कर सकते है।

मुसलमानों की दौलत और उस पर की गई टिप्पणी

ज़कात के ज़िमन में ज़फर सारेश वाला अपने लेख ''दी इन्स्टीट्यूशन ऑफ ज़कात एण्ड इट्स इकॉनोमिक इम्पेक्ट ऑन सोसायटी (The Institution of Zakat and its Economic Impact on Society)'' में रक़म तराज़ है कि ''चलिए हम यह मुआइना करते है कि क्या ज़कात का कन्सेप्ट आज भी उतनी ही अहमियत का हामिल है, जितना 1400 बरस पहले था?हम इसके लिए एक सादा हिसाब करते है।

यह जग ज़ाहिर है कि मिडिल ईस्ट (याने अरबस्तान) की एक फीसदी आबादी का 800 अरब डालर मगरिबी मुमालिक की बैंकों में सरक्यूलेट कर रहा है। इस पर 10 फीसद रेट ऑफ रिटर्न के हिसाब से 80 अरब डालर हर साल सरप्लस मिलते है। उसका दो अशारिया पाँच (याने 2.5% – जो ज़कात का हिस्सा है) 20 अरब डालर बनता है। यह याद दिलाते हुए कि यह सिर्फ एक फीसदी अरब आबादी से बनता है। अगर दुनिया के डेढ़ अरब मुसलमानों के बारे में सोचे तो कितनी दौलत मिल्लते इस्लामिया जमा कर सकती है और इसका असर मुस्लिम दुनिया की आर्थिक स्थिति पर क्या हो सकता है?'' और कुरआन में जिन लोगों पर इसे खर्च करने का हुक्म है, उन पर अगले 10 साल तक यह जमा शुदा अमवाल की तकसीम हो तो दौलत की बोहतात होना तय है।

एसे ही खुशहाल माहौल पर वह आगे लिखते है कि हज़रत उमर (दूसरे खलीफा) और उमर बिन अब्दुल अज़ीज, उमवी खलीफा (बादशाह – सन् 717–720 A.D.) के जमाने में ज़कात फण्ड सरप्लस रहता और कोई लेने वाला नहीं था। याने खुशहाली युनिवर्सल हो गई थी।

आगे अपने तजुर्बे की बुनियाद पर लिखते है कि मेरा पूरी दुनिया के मुसलमानों से जो राब्ता रहा (मौसूफ इस्लामिक बैंकिगं और शरई इन्वेस्टमेन्ट के माहिर है और पारसोली कोरपोरेशन के सी.ई.ओ. और मेनेज़िंग डाइरेक्टर है) अफसोस होता है कि 80 फीसदी इसमें से ज़कात नहीं निकालते और जो 20 फीसदी निकालते है, उनकी मसारिफ (खर्च करने का तरीका) जैसे तैसे (adhoc) है। वह कहते है कि दोनों सूरते हाल कुरानी फरमान की अनदेखी है।

मौजूदा सूरते हाल में ज़कात वसूली का माकूल इंतिज़ाम क्या हो?

इस्लाम हुकूमते जब मौजूद हो तो अमूमन ज़कात वसूली करने का काम इनका होता है। दिगरना अलेहदा–अलेहदा अपनी ज़कात का हिस्सा निकाल कर शरअी मसारिफ में खर्च कर सकते है। लेकिन तमाम मुसलमानों पर लाज़िम है कि ज़कात जमाअ करने और तकसीम के लिए एक इज्तिमाई निज़ाम बनाने की फिक्र करें। इस्लाम इन्फ्रादीयत (individuality) को पसन्द नहीं करता। इज़तिमाईयत (collective system) को पसन्द करता है। जिस तरह अकेले नमाज़ पढ़ने की बजाय बा ज़माअत नमाज़ अदा करना। अगर ऐसा होता है तो ज़फर साहब की शिकायत के अज़ाले में मदद मिलेगी।

आखिरी नोट्स

1. इस मज़मून के टारगेट खास तौर से वह नोजवान है जो तहरीक की इब्दिता में पले बड़े और अब अल्लाह के फज़लो करम से खुद कफील हैं और जिन पर ज़कात निकालना और अल्लाह की राह में खर्च करना फर्ज़ है।

2. पूरा मज़मून कमोबेश कुरआनी एहकामात की रोशनी में लिखा गया है, फी सबीलिल्लाह है और फिर अपनी महदूद अ़क्ल और समझ का इसमें इस्तेमाल किया गया है, मुख्तसिर रखने की कोशिश की गई है। पाक परवर दिगार इसकी तहरीर में अगर भूल हो गई है तो माहे मुअज्ज़म के सदक़े में उसे मुआफ करेगा। अगर इसका असर पढ़ने वाले हज़रात पर पढ़ता है तो हम इसे अपनी खुश नसीबी और अल्लाह का करम मानेंगे। आमीन!

Ref (हवालात) -

I Let us be Muslim Part- IV - मौलाना अबुल आला मोदूदी

II ज़फर सारेश वाला - The Institution of Zakat and its Economic Impact on Society

III कुरान मज़ीद हिन्दी तर्जुमा - मुतजिम जालंधरी साहब

बोहरा यूथ

मेडीकल रिलीफ सोसायटी

की जानिब से

ईद मुबारक

कुरान, अहादीस और नहजुल बलाग़ह

I कुरान पाक

सुरः जासिया आयात 16,17

तर्जुमाः ''हमने अगले नबीयों की उम्मत (कौम) को किताबें दी और शरीअत के अहकामों को बताया और हर एक अम्र (कार्य) के लिए इनका कैसा प्रयोग हो यह बता दिया। उसके बाद इन्होंने (याने उन कौमों ने) शरीअत के अहकामों को छोड़ कर रिवाजों को पकड़ लिया और एक दूसरे से इख्तिलाफ (विरोध प्रति विरोध) करने लगे और शरीयत को हल्का कर दिया'' (याने शरीअत के अहकामों पर रिवाजों को हावी कर दिया)। उसके बाद इसी सुरः की अगली याने 18वीं आयत में नबी मोहम्मद मुस्तफा (स.अ.व.स.) को इरशादे इलाही हुवा।

तर्जुमाः ''हमने हर एक काम और हुक्म (अम्र) के वास्ते आपके लिए शरीअत के फरमान नाज़िल किये है। आप (ए नबी!) शरीअत के फरमानों पर ही चलो और लोगों की हवा नफसी (सांसारिक लालच) से पुर रिवाजों के मुताबिक मत चलो''।

माखुजः ''इमामत'' लेखक सय्यद अख़्तर रिज़वी प्रकाशित सन् 1981 / 1410 हिजरी)

टिप्पणीः कुराने पाक की तीन आयात करीमा मुसलमानों और खुसुसन बोहरा क़ोम के लिए आँखे खोलने वाली है। जहां तक पहली दो आयात है, उसमें बयान है कि शरीअते मोहम्मदी से पहले जो शरीअतें दूसरे (उलुल अज़्म) अम्बियाँ ने राइज की उसको लोगों ने अपनी तरफ से धीरे–धीरे गैर श़रई रिवोज़ो के ज़रीये उसमें बिगाड़ पैदा किये नतीज़न शरीअती अहकामों को उन लोगों ने छोड़ दिया और रिवाज़ो को ही अपना तरजे–अमल बना दिया!

याने बिद्तें रायज हो गई और शरीअत के अहकाम ग़ायब हो गये।

कहीं ऐसा न हो कि शरीअते मोहम्मदी का भी हाल एसा ही हो जाए लिहाज़ा अ़ल्लाह तआला अगली आयत याने उसी सुरः जासिया की आयत 18 में मोहम्मद मुस्तफा (स.अ.व.स.) को ख़िताब करते हुवे फरमाता है कि आप ''हवा नफसी'' से पुर एसे रिवाजों पर न चलियेगा और चूँकि हर काम के लिए उसने (याने अल्लाह (सु.व.त.) ने) शरीयत के फरमान नाज़िल कर लिये हैं, लिहाज़ा उसके मुताबिक ही अमल करिए।

जब अल्लाह (सु.व.त.) अपने आखिरी नबी (स.अ.व.स) को ऐसा हुक्म देता है, तो जो नबी करीम (स.अ.व.स.) के अपने आपको नुमाईन्दा होने का दावा करते हैं वे इस हुक्में इल्लाही की अनदेखी कर ही नहीं सकते! और ऐसा करते हैं तो वह बिदअ़त (innovation) होगी।

हमारे लिए नतीजा यह निकलता है कि शरई अहकाम चाहे वह ''इबादत'' के बारे में हो या ''मुआमलात'' के बारे में इसका मुकम्मिल खुलासा ''दआइमुल इस्लाम'' में मौजुद है। कोई भी जोड़ (Adition) या बदलाव (Alteration) अगर इसमें किया जाय, वह गोया बिदअ़त है।

मसलन दाइमुल इस्लाम में जो तारीफ (Qualification) नमाज़ की इमामत करने वाले शख़्स के बारे में है और उसी पर अमल करते हुवे एक शख़्स को इमामत के लिए चुना जाता है तो वह बिलकुल दुरस्त है। उसमें कोई और शर्त को जोड़ना बिदअ़त है। इसी तरह जैसे फर्ज़ नमाज़े सिर्फ पाँच है और छट्ठी अभी तक किसी ने नहीं जोड़ी।

II अहादीस

1. आपस में प्रेम से रहना आधी अकल है।
2. हम्म और ग़म आधा बुढ़ापा है।
3. बाल बच्चों की कमी (फ़ेमेली प्लानिंग) एक किस्म की सहलाई है।
4. अच्छा सवाल (appropriate questions) आधा इलम है।

माखुजः मजम–अल–बहरेन–शेख अहमद अली (रे.अ.)

III नहजुल बलाग़ह

तहता कलामिल ख़ालिक व फौक़ा कलामिल मख़्लूक – ईश्वर वाणी (कुरान) से नीची और मनुष्य वाणी से उच्च स्थान वाली पुस्तक है नहजुल बलाग़ह।

ख़ुतबाः नमाज, ज़कात और अमानत के बारे में मौलाए कायनात (अ.स.) अपने असहाब को यह नसीहत फरमाया करते थे।

अंशः अमानत (जर्नल माह सितम्बर 2008 से आगे)

(नमाज और ज़कात के बाद) फिर अमानत अदा करना है उसकी नज़रों के सामने है।

फिर अमानत का अदा करना है। जो अपने को अमानत का अह्ल न बना सके वह नाकाम व नामुराद है। इस अमानत को मज़बूत आस्मानों, फैली हुई ज़मीनों और लम्बे चौड़े गड़े हुए पहाड़ों पर पेश किया गया। भला उन से तो बढ़ कर कोई चीज़ लम्बी, चौड़ी, ऊंची और बड़ी नहीं है, तो अगर कोई चीज़ लम्बाई, चौड़ाई या कुव्वत और ग़लबा (सामर्थ्य एवं आधिपत्य) के बल बूते पर सरताबी (अवज्ञा) कर सकती होती तो यह कर सकते थे। लेकिन यह तो उस के इताब व इक़ाब (दण्ड व यातना) से डर गए और उस चीज़ को जान गए जिसे उन से कमज़ोर तर मख़्लूक़ इन्सान न जान सका। बिला शुब्हा इन्सान बड़ा ना इन्साफ़ और बड़ा जाहिल (अन्यायी और बड़ा मूर्ख) है।

यह बन्दगाने ख़ुदा रात के पर्दों और दिन के उजालों में जो भी गुनाह करते हैं वह अल्लाह से ढके छिपे हुए नहीं। वह तो छोटी सी छोटी चीज़ से आगाह और हर शय पर उस का इल्म मुहत्य (छाया हुआ) है।

तुम्हारे ही अअज़ा (अंग) उस के सामने गवाह बन कर पेश होंगे, और तुम्हारे ही हाथ पांव उस के लाव लश्कर हैं, और तुम्हारे ही क़ल्ब व ज़मीर (हृदय एवं अन्तःकरण) उस के जासूस हैं, और तुम्हारी तन्हाइयों के इशरत कदे उस की नज़रों के सामने हैं।

माखुजः नहजुल बलाग़ह प्रकाशक तब्लीगे इमानी मुम्बई संस्करण 1996.

- Mansoor Ali Bohra

मुख्तसर स्वानेह अमीरूल मूमिनीन

हज़रत मौला अली (अ.स.)

हज़रत अमीरूल मूमिनीन, शेरे खुदा का मुकद्दस नाम अली है आप सरकार मुस्तफा (स.अ.व.) के चाचा अबु तालिब के फरज़न्द है। आप ने पूरी ज़िन्दगी रसूल्लाह के साथ इस्लाम की इशाअत में गुज़ारी। अहले बैयत में सब से ऊंचा मरतबा आपका है।

मौला अली के फज़ाईल बैशुमार है। मगर अहम तरीन यह है कि

1. खातुने जन्नत हज़रत फातीमा ज़ेहरा (मासूमा) आप के हिस्से में आई और आपके साथ शादी हुई। आज तक एसी मासूमा औरत किसी को नहीं मिली।
2. ज़ुलफ़िकार जैसी तलवार आप को मिली। आप से पहले ओर बाद में किस को नहीं मिली।
3. खाना ए काबा में पैदाईश हुई और मस्जिद में शहादत हुई।

मौला अली (अ.स.) दामादे मुस्तफा (स.अ.) थे। रसूल्लाह ने अपनी चहेती बेटी हज़रत सैयदा फातिमातुज़हरा (अ.स.) का निकाह आप से करवाया था। आपके बड़े शहज़ादे हज़रत इमाम हुसैन (स.अ.) थे और छोटे शहज़ादे हज़रत ईमाम हुसैन थे। शहज़ादियों में हज़रत ज़ैनब व कुलसुम थी। हज़रत सैयदा फातिमा ज़ेहरा के विसाल के बाद आपने और शादियां की जिससे हज़रत इमाम मोहम्मद बिन हनफिया, हज़रत अब्बास अलमबरदार पैदा हुए।

अल्लाह तआला ने आप की औलादो नस्ल के ज़रिए इस्लाम को खूब चमकाया। आपकी नसल पाक में ऐसे ऐसे बाकमाल हज़रत पैदा हुए जो दीन के शंहनशाह कहे जाने थे और जिन के मुकद्दस कदमों को बड़े–बड़े ताजवर चूमा करते थे।

मौला अली (अ.स.) ने चार साल नो माह हुकूमत के फराईज़ निहायत अदालो इन्साफ के साथ अन्जाम दिए फिर आखिर में अब्दुर रहमान बिन मुल्जिम खारजी ने 18 रमज़ानुल मुबारक 40 हिज़री मुताबिक 25 जनवरी 661 को जुमा के दिन जब आप नमाज़े फज़र के लिए मस्जिद की तरफ जा रहे थे आप पर तलवार चलाई जिससे आप शदीद ज़ख्मी हो गए और 20 रमज़ानुल मुबारक 40 हिज़री मुताबिक 27 जनवरी 661 को इतवार की रात में जामे शहादत नोश फरमाया।

- Hussain Udaipuri

कुरान मजीद के बारे में कुछ मालूमाती पॉइन्ट निम्नलिखित हैं :

बिस्मिल्लाह ईर्रहमान निर्राहीम

1. सुरतू रेहमान में ''फबैअय्या आलाए रब्बेकुमा तुकज़्जिबान 31 बार आया है।
2. सूरतू ल्मुरसिलात में ''वैलूल यौमाएज़िन लिल्मुक ज़्ज़बीन 10 बार आया है।
3. सूरत यासीन और जुमुआ की तमाम आयातें ''मीम'' और ''नून'' पर ख़त्म होती है, जैसा हकीम, मुरसलीन, आदि और सूरतू स्साफाते की शुरू की 10 आयतों को छोड़ कर पूरी आयातें ''नून'' और ''मीम'' पर ख़त्म होती है और सूरतू ल्मुनाफिकून की तमाम आयातें ''नून'' पर ख़त्म होती है। जैसे याअ़लमून आदि।
4. कुरान मजीद में 114 सूरतें हैं और कुल सजदा 14 हैं।
5. सुरतूल्बाअ़त एक एसी सूरत है जिसके शुरू मे बिस्मिल्लाह नहीं है, इसको ''तौब'' की सूरत भी कहते है।

- Compiled by Fakhruddin R.V.

We celebrate womanhood at every turn and corner of our life. But it is not very often that we acknowledge the role of Islam in the strength displayed by Muslim women when dealing with all and sundry. Islam is a religion that empowers women to live a life of dignity and this is evident in our reformist women who have dared all in their march to freedom. Here are some examples of global valor, courtesy Muslim Women's Newsletter.

Women-led Muslim wedding sparks debate in India

A Muslim marriage in northern India officiated by women has sparked an angry debate, with one of the most influential Islamic seminaries in South Asia calling it an affront to the religion.
Naish Hasan, the 28-year-old bride and a women's rights activist, and Imran Ali, the 41-year-old groom, were married recently in a ceremony believed to be the first of its kind in India.
Muslim marriages are traditionally officiated by a man, often a local community leader. The signing of the wedding contract is witnessed by four Muslim males, two each for the bride and groom.
But this marriage in the northern city of Lucknow was presided over by a woman and all the witnesses were female. The only man involved in the wedding was Ali.
Women's rights activists have greeted the marriage as a symbolic step forward for Muslim women, but the ceremony sparked a firestorm of criticism from conservative Islamic institutions, especially the Dar-ul-Uloom seminary in northern India
An official at Dar-ul-Uloom, Ahmad Khizar Shah Masudi, called the marriage a "cruel joke on (Islamic) laws". Another Muslim group, the Lucknow Idgah Committee, has said the marriage is invalid under Islamic law.
Hasan, the bride, works for Bharatiya Muslim Mahila Aandolan, or the Indian Muslim Women's Movement, a rights group that seeks a greater role for women in Indian Muslim society.
Hasan brushed off the criticism. "I do not care. Islam says there cannot be anyone between Allah and his disciple. How come these clergymen are interfering in our matter?" she said.
In 2005, a group of Muslim women set up the All India Muslim Women Personal Law Board, saying the All India Muslim Personal Law Board wasn't doing enough to protect women's rights.
Earlier this year, the group's leader, Shaista Amber, led a group of women in prayer at a major mosque in Lucknow, breaking with tradition, which does not allow men and women to pray together.

Courtesy: AP

Fashion show for veiled women in Saudi Arabia

In what must be perhaps the first of its kind in the fashion world, three young Saudi girls organised a fashion show solely focused on veiled women.
Luma Al-Ghalib, Hida Al-Harthi and Lujain Al-Mu'allami organised the show in Jeddah on September 18 to demonstrate the greatness of Islam and "to erase the stereotyped image about Saudi women and young girls in particular", the Saudi Gazette newspaper reported.
The idea for the show came after the three participated in a summer camp in Switzerland last year. Girls of other nationalities asked them about their simple and decent dresses. The three Saudi girls then explained to participants in the camp what the veil or Hijab meant for Muslim women and how they wore it.
On returning home, they shared their experience with friends and the whole thing started to take shape. With friends and relatives encouraging them, they started making veils with different head cover designs. They then started selling these to retail shops.
"To our surprise shop owners called us ordering more head covers and caps," Luma, 19, was quoted as saying. "Thus, the idea of organizing a show emerged," she said.

Courtesy: Indo-Asian News Service

Manipur Muslim girls form union

The Manipur Muslim girl students have formed, perhaps first time in the history of the state, a union to wage a war on two fronts - to change Muslim society's approach on higher education for Muslim girls and to demand state government reservation for Muslim women.
More than a hundred Muslim girls – from Class XI to graduation level – gathered in the state capital city recently to form the All Manipur Muslim Girl Students' Union – the first-ever union formed by Muslim girls in Manipur, says a report in The Telegraph.
This is the first move from Muslim women towards asserting their rights in matters of education and government jobs. There are about 2 lakh Muslims in the state.
"Girls are still discriminated against when it comes to higher education. Their families and community discourage them though there is no restriction as such to a girl going for higher education," said M.R. Choudhary, a BSc final year student of D.M. College of Science. Choudhary was instrumental in forming the union.
Seeking reservation for Muslim women in government jobs will be on top of their agenda.

Courtesy: Mudassir Rizwan

Iranian researcher wins Quality Gold Medal

The MMG gold medal, which is the highest international quality medal for 2008, has been given by Walter Herd Foundation to Mahshid Yazdanpanah from Iran during the 14th international conference of Asia-Pacific Quality Organization and the ninth international conference of quality managers.
The medal was awarded on August 24, 2008. This is the first time Iran wins an international quality award.
Strategic design of Asia-Pacific Quality Organization is one of the activities of Yazdanpanah who has also been active in such fields as research, writing, and translation and has her own style in research projects. An interesting point about the medal is that, thus far, only three people in the world have managed to obtain it and that activities of every researcher from any nationality should be focused on production of science in Asia and the Pacific.
Yazdanpanah is currently managing director of Quality Engineering Institute and senior advisor to strategic managers in a number of technical and engineering companies including GC, EPC, and MC as well as urban development consultant engineers.

Courtesy: Iranian.ws

New Sharia law in UK gives women rights

Hailed as the biggest change in Sharia law in Britain for 100 years, a married Muslim couple will now have equal rights. A husband will have to waive his right to polygamy, allowed under Islamic law, in the new contract which has been described as "revolutionary".
Currently Muslims in Britain have an Islamic ceremony called a nikah (a non-register office marriage) which, although it is guaranteed under Sharia law, is not legally binding and does not provide a woman with written proof of the marriage and of the terms and conditions agreed between the spouses.
Dr Ghayasuddin Siddiqui, director of the Muslim Institute and one of the authors of the contract, told The Daily Telegraph: "The document is a challenge to various sharia councils who don't believe in gender equality but the world has changed and Islamic law has to be renegotiated."
The new Muslim marriage contract does not require a 'marriage guardian' (wails) for the bride, and also makes delegation of the right of divorce to the wife (talaq-i-tafweeed) automatic. This right does not affect the husband's right of talaq but enables the wife to initiate divorce and retain all her financial rights agreed in the marriage contract. These provisions reflect a recognition of changes in the Muslim world, including women's greater public roles, educational achievements and financial autonomy.
Drawn up by the Muslim Institute, the contract has taken four years to negotiate and create. It is supported by leading Muslim organisations including the Imams & Mosques Council (UK), Muslim Council of Britain, The Muslim Law (Shariah) Council UK, Utrujj Foundation, and The Muslim Parliament of Great Britain.

Courtesy: Urmee Khan, Telegraph, UK

With Best Wishes to All Share Holders, Account Holders & Well Wishesh on EID
EID-MUBARAK
THE UDAIPUR URBAN CO-OP. BANK LTD.
Call upon for : Personal Loans * Home Loans * Vehicle Loans* Business Loans
We promise competitive interest rates and speedy disposal.

Pannadhay Marg Branch	Dhan Mandi Branch	Bada Bazar Branch	
Ph: 0294 2422461 M: 9928790762	Ph: 0294 2422355 M: 9828162044	Ph: 0294 2420429 M: 9414738065	
Fatehpura Branch	Madhuvan Branch	Hiran Magri Branch	Krsihi Mandi Branch
Ph: 0294 2450762 M: 9828195535	Ph: 02942423542 M: 9460402651	Ph: 0294 2460893 M: 9414786877	M: 946030453
Rajsamand Branch	Salumber Branch	Fateh Nagar Branch	
Ph: 95 2952 224022 M: 9460415822	Ph: 95 2906 231250 M: 979903464	Ph: 95 2955 220316 M: 9929996972	

TERRORISM – HOW NOT TO COMBAT IT

- By Asghar Ali Engineer

Terrorism today is engaging attention of the whole world though we are more concerned with terrorism in our own country. There is hardly any country, which is not affected by terrorism today though reasons are widely different. In many countries terrorism is fired by separatist fire. Many regions were included in colonized countries by imperial powers to suit their own convenience least knowing that increased awareness and democratic movements in future would ignite separatist movement and when their aspirations for autonomy or independence are denied violence would be used.

Basque in Spain, South Ireland, North and North East in Sri Lanka, Kashmir, Nagaland and Assam, Tripura and Manipur in India and in several other regions in other countries separatist violence would break out claiming large number of lives and destruction of properties. What colonial powers did for their convenience in nineteenth and early twentieth centuries, present generations are paying price for the same.

Add to this list the sins committed by American imperialists in 20th and 21st century to satisfy their lust for raw materials and oil in the Third World countries and Middle East and we know the violence it has resulted in and the price thousands of innocent people are paying for it. The powerful media, however, sees Islam as the root of violence and ascribes genesis of terrorism to Islam. What an easy way out of one's own guilt!

The remedy for this terrorist violence is also simple. Declare war against terrorism, do away with concept of humans rights, find some puppets to fight its war against terror, put some suspected youth in jails and torture them till they die or go mad and feel safe from further terrorist attacks. Who commits sins and who pays? What do authorities care? They care only for their lust for power and money.

A survey was done recently by an international agency WorldPublicOpinion.org of several countries to find out how many people support torture as an effective method to combat terrorism. The survey was to gauge how many people support abolition of torture by the state as it is totally against human rights and human dignity. Largest number of Indians, though not surprisingly, supported retaining of torture to 'save innocent lives. 59% Indians said torture is necessary to combat terrorism.

People of 14 countries favour abolition of torture, even in the case of terrorists who have information that could save lives of innocent people. But four nations, including India, lean towards favouring an exception in the case of terrorists, according to the WorldPublicOpinion.org poll of 19,063 respondents, released ahead of 'International Victims of Torture Day' recently.

Majorities in India (59%), Nigeria (54%), and Turkey (51%), and a plurality in Thailand (44%) want exception for terrorists. Among all nations polled in both 2006 and 2008, India also has the largest increase in support of making exception for torture in the case of terrorism – 32% two years ago to 59% now. But it is also to be noted that the number of those who believe torture should be totally abolished also has risen in India from 23% in 2006 to 28% in 2008. But large majorities in all 19 nations favour a general prohibition against torture.

On average across all nations polled, 57% opt for unequivocal rules against torture. Thirty five per cent favour an exception when innocent lives are at risk. Just 9% favour the government being able to use torture in general.

It is also interesting to note that support for unequivocal abolition of torture was highest in Spain (82%), Great Britain (66%) and France (66%), followed by Mexico (73%), China (66%), Palestinian Territories (66%), Indonesia (61%) and the Ukraine (59%). Here the question is why support for torture is so high in case of terrorist violence? Answer is not very difficult to find.

In India the Hindu right wing or Hindu communal forces constantly propagates that terrorism can be effectively fought only by implementing laws like TADA or POTA and using torture as an effective tool. Leaders like Bal Thackeray even said that the Hindu youth should become human bomb and get away with it as the government has no moral courage to take any action.

The second reason is also connected with this. It is generally propagated by the media that it is Islam which is responsible for terrorism, being a religion of jihad. Whenever any bomb blast takes place the police immediately come out with a theory that HUJI and SIMI are involved, much before even any investigation begins. The police gives such statement because its mindset is also after all product of general atmosphere in the country.

Add to this the fact that there has been general atmosphere of Hindu-Muslim conflict for close to one and a half century since the advent of British imperialism and it is thought that all terrorists are Muslims and they should be taught a fitting lesson. Even otherwise in our country awareness of human rights is very low and since British time police have been nurtured on the philosophy of torture as an effective way to make suspected people confess to their crime.

Also our communal approach has been so hardened that even if 'Ulama of Darul Ulum, Deoband issues fatwa against terrorism and constantly campaign against terrorism through huge rallies and Bal Thackeray publicly states that the Hindu youth should become human bombs, still only Muslim youth will remain suspect in every bomb blast case and would be tortured.

The communal approach has been so hardened that in a TV discussion after two bomb blasts in Navi Mumbai and Thane by activists of Sanatan Sangathan when the moderator asked if this organization should be banned like SIMI, most of the participants said no as in their view no Hindu organization can be anti-national like SIMI.

What is more unfortunate that leaders of secular parties for fear of alienating public opinion do not challenge communal forces effectively and let menace of communal polarization grow in the country. After Bal Thackeray's statement not a single leader of any political party countered him, let alone demand his arrest. Their only concern is votes, not secularisation of the country.

As USA has miserably failed in solving the problem of terrorism by using torture; and ruining lives of hundreds of innocent people in Gantanamo Bay India, and for that matter any other country, can also not succeed in solving this problem simply through torture. It is a political problem and has to be solved politically. Political policies, not the jackboots, can solve such problems.

All the experts on terrorism have opined that USA has miserably failed in tackling the problem of terror and its so-called war on terror has succeeded only in increasing terrorist attacks in Afghanistan, Iraq and other places. Its arresting innocent Muslim youth and inhumanly torturing them in prisons has miserably failed. USA is least prepared to find a political solution as its lust for power and oil resources in Middle East is insatiable and it desperately needs support of Israel in that region and hence does not want to alienate it by solving Palestinian problem through lasting peace.

In India too terrorist problem is linked up with so many problems and it would be utter shortsightedness to think that it is due only to Islam and Muslims and allows utter police inefficiency to get away by blaming HUJI and SIMI and keep on torturing innocent Muslim youth. Sooner the Government of India understands this the better it is for the country. Otherwise terrorist incidents would keep recurring and innocent people keep dying and some innocent Muslim youth would continue to suffer without the problem being solved.

In no blast so far the police has succeeded in nabbing real culprits who have escaped conveniently. After Hyderabad twin blasts police as usual arrested poor Muslims, mostly rickshaw pullers or vegetable vendors and so on, and mercilessly tortured them. They were all innocent and after public campaign half of them had to be released on bail and some are still inside jail continuing to suffer. Police generally chooses poor and voiceless youth as they carry no clout and can be easily made scapegoat.

After Jaipur blast too a few poor Muslim youth and imams were rounded up, tortured and released.

How long will this go on? The real culprits easily escape and have the last laugh. The communalised police with such short-sighted approach would succeed only by aggravating the problem. I am of the firm opinion that torture has no place in democratic India with respect for human rights.

Torture, at best, helps corrupt and communal and inefficient police officers only who do not collect solid evidence painstakingly. Their inefficiency and communal outlook become powerful block. An efficient and honest police officer would confront the suspect person with such evidence that he would not be able to deny. Our judiciary is also partly responsible for allowing the police to torture the accused in their custody. In a seminar on State, Society and Terrorism held in Jaipur on June 22, a retired Session Judge Mr. Bajwa even talked of 'judicial terrorism', which caused furore among the participants.

Let us hope the authorities would realise these problems soon and try to evolve a sound policy to combat terrorism though as complex an approach as the complex problem terrorism is.

- Centre for Study of Society and
Secularism Mumbai
E-mail: csss@mtnl.net.in

Leaders like Bal Thackeray
said the Hindu youth should become human bomb and get away with it as the government has no moral courage to
take any action.

Police generally chooses poor and voiceless youth as they carry no clout and can be easily made scapegoat.

Letter to the Editor:

बोहरा जर्नल की कामयाबी पर मुबारकबाद!
मुझे इस बात की खुशी है कि आप जर्नल में ख्वातीन के तहरीक मुन्तालिक उनके ख्यालात और उनके contribution को प्रकाशित कर उनको एहमियत दे रहे हैं। यह एक अच्छा कदम है।
मेरा यह मशविरा है कि आप उन लोगों को भी याद करें जो हयात में नहीं है। इन लोगों ने तहरीक की शुरूआती दौर में काफी तकलीफें उठाई, और कुर्बानीयॉं दी थी। हमारी नई generation को इस बात की जानकारी होगी कि हमारी तहरीक, शुरूआती दौर से कैसे गुजरी।

–हिबतुल्ला अत्तारी

आप द्वारा प्रकाशित ''आल वर्ल्ड बोहरा जर्नल'' के दो अंक पढ़े। नई साज–सज्जा व कलेवर से सजा यह मासिक अखबार बेहद पसंद आया। हमारी शुभेच्छा है कि यह इसी तरह प्रकाशित होता रहे।
इस पत्र को और अधिक लोकप्रिय बनाने के बारे में मेरे कुछ सुझाव हैः

1. भाषाःपत्र में जो भाषा हो वह आम पब्लिक की, बोलचाल की भाषा हो।
2. वर्तनीःजो भी लिखा जाये उसकी प्रूफ रीडिंग करवा कर सही वर्तनी में छापा जाये ताकि अशुद्धि न रहे।
3. सामग्रीः नाम के अनुसार सभी बोहरा आबादी वाले स्थानों की खबरों को स्थान दिया जाये।

–शब्बीर बोहरा

चैन्नइ की बोहरा बहनों का विरोध

2 सितम्बर को मगरिब की नमाज़ के वक्त चैन्नइ की बोहरा बहनों को फी मुसल्लाह 1500 रूपियों का अतिया नहीं जमा करवाने पर रोका गया और रोज़ा इफतारी देने से इंकार कर दिया गया। इस पर बोहरा बहनों ने गुस्से का मुजाहिरा करते हुए वहां रखी हुई दो कारों को बुरी तरह नुकसान पहुँचाया।

पिछले साल की तरह इस साल भी बहनों से फी मुस्ल्लाह 1500 वसूल कर मस्जिद में प्रवेश के लिये पास जारी करना शुरू किया जिस पर 20 साल की बहन फातिमा ने विरोध करते हुए व्यंग में कहां अल्लाह के घर को दुकान बना रहे हो। इस पर उसे धक्के देकर बाहर निकाल दिया गया। साथ में 60 और औरतों को 1500 रूपिये देने से इंकार करने पर बहार निकाल दिया गया। यहां ध्यान देने योग्य बात यह है कि आदमियों के लिये कोई चार्ज नहीं है।

60 साल की बुजुर्ग बहन ने प्रतिरोध स्वरूप जब यह कहां कि हम पिछले 40 साल से मस्जिद में नमाज अदा करने के लिये आ रही हे रमजान में एसा कभी नही होता है इस पर उन्हें भी इफ्तारी से महरूम रखा गया।

अब्बास मिलवाला जो कि हालिया सेक्रेट्री है ने कहां ''कोई परेशानी जरूर है, मैं कुछ कहने मे असमर्थ हूँ''।

आभारः दक्कन क्रोनीकल

हमारा सवाल : सामाजिक रीतियों में बढ़ते आर्थिक अपव्यय पर रोक के लिए आपके सुझाव पर प्राप्त हमारे जागरूक पाठक का लेख।

फातिहा बनाम सवेजन खाना

एक काकाजी बिस्तर पर अपनी आखिरी सांसें ले रहे थे, कि रसोई में से चावल दाल पलीता पकने की खुश्बू आती है। काकाजी से रहा नहीं जाता है और वह करवट बदलने की कोशिश करते हैं। आवाज़ सुनकर काकी मॉं बोलती है ''सुई जाओ आ तमारा खान्डिया नु जमन छे''।

होनी से पहले बात फिर से जमन पर ही आ टिकी है। अब यह भी हमारी रिवायतों में से एक है। इसका इलाज शायद हकीम लुकमान के पास भी न हो । लेकिन इस बार हम संजीदगी से बात करने के लिये आप सब से मुखातिब हैं। आप कहेंगे कि हमारे सारे खाने खुशी और ग़म के ही होते हैं और हमारी खुशी और ग़म में किसी को भी एतराज़ करने का कोई हक नहीं है। जी हां, आप एक आज़ाद जम्हूरियत यानि बोहरा यूथ के बाशिन्दे हैं और अपनी मर्ज़ी के मालिक हैं। एक आज़ाद जम्हूरियत यानि बोहरा यूथ के बाशिन्दे तो हम भी हैं। अपनी बात कहने का हमें भी पूरा हक है। हम कहेंगे ज़रूर।

खुशी के मौके पर जमन करना खुशी का इज़हार होता है और इसमें रिश्तेदार और दोस्तों के शरीक होने से अपनी खुशी में इज़ाफा होता हैं। यहां तक तो हम सब एक राय है। लेकिन यही बात ग़मी के मौके पर लागू नहीं होती है।

अगर यह सच है तो फातिहा बनाम सवेजन खाना क्यों?आप कहेंगे कि मरहूम को सवाब पहुंचाने के लिये। यह दलील अगर मान ली जाये तो भी चन्द सवालों के जवाब नहीं मिलते हैं। पहला नुक्ता तो यह कि इस्लाम में हर एक इंसान के अमाल उसके साथ जाते हैं और उसे अपना हिसाब खुद ही देना पड़ता हैं। हम और आप मिलकर उसमें कोई बदलाव नहीं ला सकते हैं। हां मरहूम की याद दुनिया में ताज़ा रखने के लिये हम अपने अक़ीदे से कुछ ऐसा काम ज़रूर कर सकते हैं जिससे सब का भला हो और मरहूम की याद भी ताज़ा रहे।

दूसरा नुक्ता यह देखना है कि, सवेजन खाना खाकर सवाब पहुंचाने वालों में कितने लोग मरहूम की नमाज़े ज़नाज़ा में शामिल हुए और ताज़ियत दी। जो लोग नमाज़े ज़नाज़ा में शामिल नहीं हो सकते और जिनके पास ताज़ियत देने का वक्त नहीं है वे सवेजन खाना खाकर क्या सवाब पहुंचायेंगे?वैसे भी सवाब के काम करने का पहला उसूल यह है कि दायें हाथ से सवाब का काम करो और बायें हाथ को पता न चले।

आप जिन मरहूम के नाम पर सवेजन खाना कर रहे हैं उन्हीं के नाम से उतनी ही रकम से या उससे कम रकम में ज़रूरतमंदों के तालीम के लिये वज़ीफा दे सकते है या किसी को इलाज में मदद देकर नयी ज़िन्दगी दे सकते हैं, या किसी मिस्कीन को हज या उमराह करने में मदद कर सकते हैं। मरहूम की याद भी ताज़ा रहेगी और आपको सवाब मिलेगा।

अगर हमारी तज़वीज़ आपके समझ में आती है तो इसको कारगर करने के लिये भी हमारे पास एक सुझाव है । एक Charitable Trust बनाया जाय जिसमें यह पैसा जमा किया जाय और यह पैसा सिर्फ तालीम, हज व उमराह या मिस्कीन मरीज़ों के ऐसे इलाज के लिये दिया जाय जिसका खर्च वह नहीं उठा सकते हैं।

इतनी सी गुज़ारिश ज़रूर है कि फैसला करने से पहले हमारी बात पर ग़ौर करें। हम और हमारे साथ कौन के ज़रूरतमंद लोग आपको दुआ देंगे।

- Siraj

अवामी ट्राईब्यूनल

दहशत गर्दी के ख़िलाफ लड़ाई के नाम पर मुस्लिम समाज पर की गई ज्यादतियों के खिलाफ ''अन्हद'' और ''ह्यूमन राइट्स लॉ नेटवर्क एण्ड पीस'' ने हैदराबाद में एक अवामी ट्राइबुनल की बैठक रखी थी। इस बैठक को बुलाए जाने का मक़सद देश के किसी भी हिस्से में विस्फोट होते ही सेक्यूरिटी एजेन्सियों द्वारा अपनी खुद की नाकामी और निकम्मे पन को छुपाने के लिए ''कुर्बानी के बकरो'' को पकड़ कर यातनाए दिये जाने की कार्यवाही की समीक्षा करना था। ट्राईब्यूनल के मेम्बरान यह हज़रात थे :

1. जस्टिस सरदार अली खान – रिटायर्ड जज आंध्रा हाईकोर्ट
2. जस्टिस एस.एन. भार्गव – ''चीफ जस्टिस सिक्किम हाईकोर्ट
3. री के.जी. कन्नाबीरम – पी.यू.सी. एन. के राष्ट्रीय अध्यक्ष
4. डॉ असगर अली इंजीनीयर – चेयरमेर सेन्टर फार स्टडी ऑफ सोसायटी एण्ड सेक्यूलरिज्म मुम्बई
5. प्रशांत भूषण – एडवोकेट सुप्रिम कोर्ट
6. डॉ राम पुनियानी – लेखक, रिटायर्ड प्रोफेसर आई. आई. टी. मुम्बई
7. प्रा. रूप रेखा वर्मा – पूर्व वाइस चान्सलर लखनऊ यूनिवर्सिटी
8. ललित सुरजन – एडीटर देश बन्धु
9. किंगशुक नाग – टाइमस ऑफ इण्डिया

इस ट्राईब्यूनल ने पूरे मुल्क से आये 40 से ज्यादा ऐसे बेगुनाहों के बयानात कलम बन्द करके अपनी एक अन्तरिम रिपोर्ट ट्राईब्यूनल गठित करने वाले संगठनो को दी है। इस रिपोर्ट में ट्राईब्यूनल के चौका देने वाले खुलासे है। उन्होंने बताया है कि मुस्लिम समाज को बदनाम करने और उनके बेगुनाह नोजवानों को बगैर सबूत पकड़ने और यातनाएं देने में महाराष्ट्र, गुजरात, मध्य प्रदेश, आंध्र प्रदेश और राजस्थान अग्रणीय है।

इन्होंने इस बात पर भी अफसोस जाहिर किया कि कोर्ट्स ने भी पुलिस रिमाण्ड को एक साधारण प्रक्रिया बना रखा है। पूरी रिपोर्ट ram.puniyani/gmail.com से हासिल की जा सकती है।

(बशुक्रियाः secularperspective / googlegroups.com on behalf of RamPuniyani)

Editorial Board: Editor: Razia Sanwari, Editorial Assistant : Tauseef Hussain Mandiwala, Shabana Meyaji
Advisory Board: Abid Adeeb, Mansoor Ali Bohra, Hussain Udaipuri, Yaqub Ali Zaheer, Mansoor Ali Nathdwarawala & Yusuf Ali R.G.
Published by: Bohra Youth Sansthan, 73, Dr. Zakir Hussain Marg, Phone: 91-0294-2521719, Fax: 91-0294-2524886
E-mail: bohra.journal@hotmail.com
Printed by: National Printers, 124, Chetak Marg Udaipur - 313001

For more news on Progressive Dawoodi Bohras from over the world, visit http://dawoodi-bohras.com/

रजि:RAJH/9396 पोस्ट रजि- नं-RJ/SR/29/12/2006-08

Disclaimer: The views published in this publication are solely the contributors' opinion. The Editor and editorial board holds no responsibilities for them.

POSTAL ADDRESS